आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 09 | उदयपुर शुक्रवार 15 मई 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज के साथ लॉकडाउन 4 भी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 'आत्मनिर्भर भारत' के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई को एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की जो कोरोना संकट से जुड़ी पूर्व की आर्थिक घोषणाओं, रिजर्व बैंक के फैसले सहित करीब-करीब 20 लाख करोड़ रुपए का है। पीएम ने कोविड-19 के मद्देनजर लागू देशव्यापी लॉकडाउन के बीच राष्ट्र के नाम संबोधन में इस आशय की घोषणा की।

मोदी ने कहा कि लॉकडाउन का चौथा चरण 'लॉकडाउन 4' पूरी तरह नए रंग-रूप वाला होगा, नए नियमों वाला होगा। कोरोना संकट का सामना करते हुए, नए संकल्प के साथ मैं एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा कर रहा हूं। यह आर्थिक पैकेज, 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की अहम कड़ी के तौर पर काम करेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि हाल में सरकार ने कोरोना संकट से जुड़ी आर्थिक घोषणाएं की थीं, रिजर्व बैंक ने फैसले किये थे और जिस आर्थिक पैकेज का ऐलान हो रहा है, उसे जोड़ दें तो यह करीब-करीब 20 लाख करोड़ रुपए का है।

मोदी ने कहा कि यह पैकेज भारत की जीडीपी का करीब-करीब 10 प्रतिशत है। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्ध करने के लिए इस पैकेज में भूमि, श्रमिक, नकदी और कानून सभी पर बल दिया गया है। यह आर्थिक पैकेज हमारे कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, लघु-मंझोले उद्योग, एमएसएमई और ईमानदार करदाताओं के लिए है। यह लोगों की आजीविका का साधन एवं आत्मनिर्भर भारत के हमारे संकल्प का मजबूत आधार

उनके आधार पर लॉकडाउन 4 से जुड़ी जानकारी भी आपको 18 मई से पहले दी जाएगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना से हम लड़ेंगे और आगे भी बढ़ेंगे। कोरोना संकट शुरू होते समय देश में एक भी पीपीई किट नहीं बनती थी। एन-95 मास्क का भारत में नाममात्र उत्पादन होता था लेकिन आज हर रोज 2 लाख पीपीई किट और 2 लाख एन-95 मास्क बनाए जा रहे हैं। एक राष्ट्र के रूप में आज हम एक बहुत ही अहम मोड़ पर खड़े हैं। इतनी बड़ी आपदा भारत के लिए एक संकेत लेकर आई है, एक संदेश लेकर आई है, एक अवसर लेकर आई है।

प्रधानमंत्री ने देश की जनता के संयम और धैर्य की प्रशंसा करते हुए उसे इसके लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आज कोरोना संकट से जहां पूरी दुनिया में हाहाकार है फिर भी इस महामारी में देश के 130 करोड़ लोगों ने जिस धैर्य और संयम का परिचय दिया है, निश्चित ही वह तारीफ के काबिल है।

उन्होंने कहा कि देशवासियों के इसी बर्ताव की वजह से आज हम अन्य देशों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। तमाम तरह की परेशानियां झेलने के बावजूद देश की जनता ने लॉकड़ाउन के नियमों का पालन कर जिस तरह सरकार का साथ दिया है उससे उम्मीद है कि आगे भी देश को कोरोना से जीत दिलाने में जनता सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगी। उन्होंने कहा कि कोरोना लंबे समय तक जीवन का हिस्सा रहने वाला है लेकिन ऐसा नहीं है कि हमारी जिंदगी कोरोना के ईदगिर्द ही सिमट कर रह जाए। हम मास्क पहनेंगे और दो गज की दूरी का पालन करेंगे। अपने लक्ष्यों को दूर नहीं होने देंगे और उन्हें पाने के लिए आगे बढ़ेंगे। हमें थकना, हारना, टूटना, बिखरना मंजूर नहीं। हमारा संकल्प इस संकट से भी विराट होगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अब हम भारतवासियों को 'लोकल' बनना होगा। न केवल 'लोकल' प्रॉड़क्ट खरीदने हैं बल्कि उनका बढ़-चढ़कर प्रचार भी करना है।

दो माह की तपस्या न जाए बेकार, राजधानी से लेकर वार्ड तक हो पुख्ता क्वारेंटीन : मुख्यमंत्री

जयपुर, (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि करीब दो माह की हमारी तपस्या व्यर्थ नहीं हो, इसके लिए जरूरी है कि दूसरे राज्य से आने वाला हर व्यक्ति क्वारेंटीन के नियम की पूरी तरह पालना करे। उन्होंने कहा कि जीवन की रक्षा के लिए क्वारेंटीन राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। दूसरे राज्यों से बड़ी संख्या में प्रवासी एवं श्रमिक राजस्थान आ रहे हैं, ऐसे में कोरोना का संक्रमण गांवों में नहीं फैले, इसके लिए क्वारेंटीन की पुख्ता व्यवस्था बेहद जरूरी है। जिला स्तर से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक प्रशासन एवं अन्य लोग मिशन भावना के साथ क्वारेंटीन के उद्देश्य को सफल बनाएं।

गहलोत ने कहा कि भीलवाड़ा एवं झुंझुनूं सहित अन्य जिलों में कोरोना संक्रमण को नियंत्रित करने में जो कामयाबी हमें अभी तक मिली है, उसके पीछे क्वारेंटीन की मजबूत व्यवस्था महत्वपूर्ण कदम रहा है। इसे और सुदृढ़ बनाकर ही हम इस लड़ाई को जीत पाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने राजस्थान एपिडेमिक डिजीजेज अध्यादेश-2020 के तहत बाहर से आने वाले व्यक्ति के लिए क्वारेंटीन अनिवार्य कर दिया है। साथ ही होम क्वारेंटीन व्यवस्था को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए राज्य से लेकर वार्ड स्तर तक क्वारेंटीन प्रबंध समितियों का गठन किया गया है। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार राज्य स्तरीय क्वारेंटीन प्रबंधन समिति के लिए अतिरिक्त मुख्य सचिव सार्वजनिक निर्माण विभाग श्रीमती वीनू गुप्ता को अध्यक्ष बनाया गया है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास राजेश्वर सिंह, राजस्थान भण्डारण निगम के सीएमडी पीके गोयल, प्रमुख शासन सचिव सूचना प्रौद्योगिकी अभय कुमार, प्रमुख शासन सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अखिल अरोरा, प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास भास्कर ए. सांवत और शासन सचिव महिला अधिकारिता के. के. पाठक इस समिति के सदस्य हैं।

जिला स्तरीय क्वारेंटीन प्रबंधन समिति संबंधित कलक्टर की अध्यक्षता में कार्य करेगी, जिसमें क्षेत्रीय सांसद, जिले के विधायक, पुलिस अधीक्षक, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला चिकित्सालय के चिकित्सा अधिकारी, जिला रसद अधिकारी, नगर परिषद के आयुक्त, सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियन्ता, जिला शिक्षा अधिकारी तथा कलक्टर द्वारा नामित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी सदस्य होंगे।

जारी निर्देशों के अनुसार, उपखण्ड स्तर पर क्वारेंटीन प्रबंधन समिति संबंधित उपखण्ड मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता में कार्य करेगी। इसमें क्षेत्रीय विधायक, पुलिस उप अधीक्षक, पंचायत समिति के विकास अधिकारी, तहसीलदार, ब्लॉक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी, प्रवर्तन अथवा रसद अधिकारी एवं कलक्टर अथवा उपखण्ड मजिस्ट्रेट द्वारा नामित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी शामिल होंगे। पंचायत स्तर पर क्वारेंटीन की व्यवस्था ग्राम पंचायत स्तरीय प्रबंधन समिति की देखरेख में होगी। इस समिति में प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, पटवारी, संबंधित गांव के सरपंच और ग्राम विकास अधिकारी, बीएलओ, बीट कॉन्स्टेबल, एएनएम, महिला पर्यवेक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और उपखण्ड अधिकारी द्वारा नामित प्रतिनिधि शामिल होंगे। इसी प्रकार नगरीय क्षेत्रों में वार्ड स्तर पर क्वारेंटीन प्रबंधन समिति में बीएलओ, पार्षद, सफाई निरीक्षक, बीट कॉन्स्टेबल, एएनएम, स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा उपखण्ड द्वारा नामित प्रतिनिधि होंगे। क्वारेंटीन की व्यवस्था को मजबूत बनाने में सांसदों, विधायकों के साथ-साथ सभी शहरी एवं पंचायत जनप्रतिनिधियों की बड़ी भूमिका है।

श्रमिकों का पैदल चलना पीड़ादायक :

मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रवासी मजदूरों का पैदल अपने गंतव्य के लिए रवाना होना अत्यंत पीड़ादायक है। राज्य सरकार वे सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेगी, जिनसे इन श्रमिकों को घर जाने के लिए पैदल चलने की पीड़ा नहीं झेलनी पड़े। उन्होंने सभी जिला कलेक्टरों को आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि ऐसे श्रमिकों के लिए विशेष शिविर खोले जाएं और इन शिविरों में भोजन, पेयजल एवं शौचालय सहित अन्य मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं।

गहलोत ने रोडवेज के प्रबंध निदेशक को निर्देश दिए हैं कि वे जिला कलेक्टरों की मांग के अनुरूप बसें उपलब्ध कराएं ताकि श्रमिकों को आसानी से निर्धारित स्थान तक पहुंचाया जा सके। उपखण्ड अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि कोई भी श्रमिक सड़क पर पैदल यात्रा नहीं करें। वे इसके लिए निगरानी करवाएंगे जिसमें पुलिस उपाधीक्षक उनका सहयोग करेंगे। यह भी निर्देश दिए गए हैं कि 500 किलोमीटर से अधिक दूरी पर जाने वाले श्रमिकों को रेल से भेजने के लिए उनकी सूचियां तैयार कर परिवहन आयुक्त को उपलब्ध कराएं ताकि वे ट्रेनों के लिए उचित समन्वय कर सकें।

खोज-खबर

मालती शर्मा के पत्र

साहित्य के साथ-साथ पत्र साहित्य भी साहित्य संसार की एक विशेष धरोहर रहा है। अनेक प्रसंगों पर समय-समय पर लिखे गये पत्रों ने बड़ी महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान भूमिका निभाई है। इन पत्रों द्वारा इतिहास, साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, कला के अलावा संकट के समय सहयोग, संधि, शान्तिवार्ता एवं संबल प्रदान करने का भगीरथ प्रयास भी हुआ है। आवश्यकता के अनुसार महत्त्वपूर्ण जानकारियों का आदान-प्रदान करने, अच्छी-बुरी घटनाओं पर प्रशंसा तथा संवेदनाओं में सहभागिता निभाने जैसे अनेकानेक संदर्भों में भी आपसी पत्राचारों का योगदान कमतर नहीं रहा।

राजकाज के सुसंचालन तथा शासनतंत्र के सुदृढ़ीकरण में भी पत्रों की भूमिका असंदिग्ध रही। पुरालेखों तथा संग्रहालयों में संरक्षित रूक्के, पट्टे, परवाने, ताम्रपत्रादि के रूप में जो धरोहर मिलती है वह अनेक रूपों में अद्‌भुत तथा आंख खोलने वाली है।

मालती शर्मा से मेरा पत्राचार साठ के दशक के जाते-जाते शुरू हुआ। उनका पहला लेख मैंने रंगायन के जनवरी 1970 के अंक में प्रकाशित किया। सन् 1994 तक वे रंगायन में छपती रहीं। उनकी पहली पुस्तक 'संस्कृति के सरोकार' भी 1981 में मैंने भारतीय लोककला मण्डल से छापी। इसी वर्ष उनकी कविता पुस्तक 'निर्वासन की आंधी' भी मैंने अपने मंगल मुद्रण से प्रकाशित की। पहलीबार 1972 में वे कलामण्डल की लोककला संगोष्ठी में आईं फिर टी.आर.आई. की गवरी पर हुई राष्ट्रीय कार्यशाला में और अन्तिम बार जब नाथद्वारा के साहित्य मण्डल द्वारा 06 मार्च 2013 को आयोजित समारोह में ब्रज लोककला भूषण की उपाधि से अलंकृत होने आईं तब चार दिन मेरे निवास पर ठहरीं।

'परम्परा का लोक' नाम से मैंने उनके लोकसंस्कृतिपरक लेखों की पुस्तक का सम्पादन किया जो उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में पहचानी गई। उसकी भूमिका 'घट संचित बून्दों की कहनी' में उन्होंने लिखा- 'रंगायन में मेरे लेखन के प्रकाशन का अटूट सिलसिला रहा। रंगायन के माध्यम से ही डॉ. भानावतजी ने मुझे और न जाने कितने लेखकों को लोकसाहित्य जगत में स्थापित किया।

मुझे तो वे ही लाये। जो भी लिख भेजती वह छपता। आज तो उस सबको देख मुझे खुद भी आश्चर्य है कि क्या उस कच्ची उम्र में मैंने ही यह सब लिखा था।' (पृष्ठ 17) और अन्त में यह लिखकर यह कृति ही मुझे भेंट कर दी- 'लोक परम्परा की अनवरतता, निरंतरता पिछले 50 वर्षों के लेखन की यह सम्पादित कृति लोक साहित्य के सुमेरु डॉ. महेन्द्र भानावत को ही समर्पित है।'

मालतीजी के अनेक पत्र मेरे संग्रह में हैं। वे हिन्दी, ब्रज, बुन्देली और मराठी लोकसंस्कृति की रसवन्ती कलाओं की कमनीय निधि के रूप में निरन्तर अपने लोक-लेखन को समर्पित रहीं। अनेक बार मैंने उनसे अपनी रूचि, चाह और आश्वयकता के अनुरूप सामग्री की चाहना भी की। उन्होंने भी अपनी चाह के अनुरूप मुझ से राजस्थानी संस्कृतिपरक जानकारी चाही। एकबार उन्होंने घर से संबंधित जानकारी मुझसे चाही थी। उत्तर में मैंने अपने 15 जुलाई 2015 को जो पत्र लिखा वह इस प्रकार है-

प्रिय मालतीजी,

आपने घर के बारे में पूछा। सर्वाधिक चर्चित नाम तो घर ही है। राजस्थानी लोक में घर को कई रूपों में, कई रंगों में ओपमित किया गया है। घर का सुख और बेघर का दुख, इसके सिवाय सुख-दुख और क्या हो सकता है। अंग्रेजी कवियों ने लिखा ही था- 'देअर इज नो प्लेस लाइक होम, होम-होम स्वीट-स्वीट होम ;' घर से बाहर नहीं निकलने वाले को 'घर घस्सैल' कहते हैं।

विरहिणी को पति बिना घर ही खाने को दौड़ता है। ऐसे में पपीहा भी उसे वैरी लगता है- 'म्हारै घरे नहीं भरतार पपैया वैरी ना बोलो' और विवाह मंडप से विदा होती बाई भावज से कहती है- 'एल्यो भावज घर आपणो म्हैं तो जाऊं पियूजी रे देस/ संपत व्हेतो लावजो न्हीं तो भलां म्हांणे देस।' अर्थात् यह लो भाभी, अपना घर संभालो। मैं तो अपने प्रियतम के घर चली। आपस में संप-सौहार्द्र हो तो मुझे लेने आना, नहीं तो अपने सुसराल ही भली। पति परदेश कमाने गया। वर्षों बीत गये। लौटा नहीं। विरह का ताप कैसा झुलसाता है। वह कहती है-'छप्पर पुराणो पिया पड़गयो रे, तिड़कण लाग्या बांस.... अब घर आइजा गौरी रा सायबा।' और मन मसोस कर रह जाती है-

टाबर हो तो राखलूं पिया
जोबन राख्यो न जाय
कागद हो तो बांचल्यूं पिया
करम न बांच्यो जाय
कुवो हो तो डाकल्यूं पिया
समंदर डाक्यो न जाय
अब घर आइजा बरसा मोकळी....

आदिवासी घर को घैर कहते हैं। गरीब को तो झोंपड़ा, झूंपड़ी भी नसीब नहीं। रेगिस्तानी इलाकों में घास-फूस के बने झूंपै ही देखने को मिले। रहने को झूंपड़ा तक नसीब नहीं, कहते ही हैं कई लोग अपना झोंपड़ा स्वयं ही बांध लेते हैं।

गवरी कार्यशाला में उपस्थित संभागी

सीता ने जंगल में घासफूस की बनी मढ़ैया में विश्राम किया। यही मढ़ैया, मड़ई नाम से जानी जाती है। पंचवटी में सीतामाता के लिए कुटिया बनाई गई। राजस्थान के रासधारी ख्याल में प्रसंग आता है- 'हरि ने कुटिया बणाई रामा जाय वन में।' इसी कुटिया के लिए गुप्तजी ने पंचवटी नामक खण्डकाव्य में लिखा- 'पंचवटी की कुटी खोलकर खड़ी स्वयं क्या उषा थी?' उषाकाल में सीता द्वारा कुटी खोल दिखाई देने पर गुप्तजी, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण ने उषा को सीता रूप में प्रस्तुत कर जो उदात्त कल्पना की, समालोचकों, लेखकों ने उसे कई दृष्टियों से अपनी कलम से संवारा।

राजा-महाराजाओं के निवास को महल कहते हैं- 'महल के पाषाण कुंठित, कुटीर कंकड़ आज मचला।' राजा-महाराजाओं के अधीन ठाकुर, सामंत, सरदार, उमराव के निवास स्थल हवेली, रावला, ठिकाना कहे गये- 'ठिकाणै ठाकर वाजै / रावजी रावले बिराजै / सरदार हवेली में हवाखोरी करै।

महल का एक नाम प्रासाद, राजप्रासाद भी है। ब्रजभूमि से श्रीनाथजी को मेवाड़ लाकर नाथद्वारा 'हवेली' में बिराजमान किया। उदयपुर में श्रीनाथजी जहां प्रतिष्ठित हैं वह स्थान श्रीनाथजी की हवेली नाम से जाना जाता है। इनकी सेवा-पूजा के लिए अष्टछाप के कवियों के जिन पदों का संगीतबद्ध गान किया उसे 'हवेली संगीत' कहा गया।

आदिवासी लोगों का निवास टापरा भी कहलाता है। यह शब्द छोटे घर-झूंपड़े के लिए सर्वत्र प्रयोग में आता है। जीवनकाल में छोटा घर, टापरा भी नहीं बनाने वाले निराश हो कहते सुने जाते हैं- 'एक टापरा तक खड़ा नहीं कर सके।' टापराबाई, टापरचंद नाम भी रखे जाते हैं। मेरी मां कहती थी कि मेरे फूफाजी का नाम टापरचंदजी था। घर अब बंगला भी हो गया है। गृह तो है ही। नया घर बनने पर उसमें प्रवेश का भोज गृहभोज, गृहप्रवेश के लिए गृह शांति- होम यज्ञादि अनुष्ठान और पूर्व रात्रि रात्रिजागरण-रातीजगा किया जाता है। गृहदेव-पूर्वजों को निमंत्रित कर उनकी पूजा-प्रतिष्ठा की जाती है।

अंतिम बार वे 6 मार्च 2013 को नाथद्वारा के साहित्य मंडल द्वारा आयोजित समारोह में आईं जहां उन्हें 'ब्रज लोककला भूषण' की उपाधि प्रदान की गई। यहां से वे उदयपुर आईं और चार दिन मेरे निवास पर ठहरीं। जब लौटीं तो 15 मार्च 2013 को उन्होंने लिखा- ' उदयपुर के चार दिन! पारिवारिक सुख का अपूर्व आनंद मन से जाता नहीं है। मैं तो जैसे सरजीवन पा गई थी आत्मीयता की मिठास का। आपके दुर्घर्ष संघर्ष की गाथा ने और उससे बाहर आने की आपकी अपराजेय जिजीविषा ने मुझे भी शक्ति दी है, बीमारियों और परिस्थितियों से लड़ने की, कुछ करने की।' पाण्डुलिपि का यहां जिस-जिस को शीर्षक बताया, सभी ने बहुत पसंद किया। छोटा बेटा जो विदेश में है, तो फोन पर उछल पड़ा। यह पाण्डुलिपि 'परम्परा का लोक' शीर्षक लिये थी जिसका प्रकाशन आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली ने किया।

मालतीजी के इस पत्र के उत्तर में मैंने 25 मई 2013 को उन्हें इधर के मित्रों की याद दिलाते लिखा- 'आपका उदयपुर प्रवास अभी भी यार दोस्तों को शुभ शकुन में बांधे है। नंदबाबू, भगवतीभाई, रजनीबेन, जब भी मिलते हैं, आपको याद कर हालचाल पूछते हैं, प्रसन्न होते हैं। अब मित्रों का ही सुख-संसार बचा हुआ है। यही हमारी धरोहर बनी बची हुई है। हमारे अपने जीवनसाथी जब बिछुड़ जाते हैं तब कोई संपदा बची नहीं लगती है। नंदजी, मैं, भगवती, आप सब लगता है जैसे एक ही नाव के नियंता हैं।'

अब तो न मालती शर्मा हैं न उनके पति और न बड़ा पुत्र, नाथद्वारा में भी आयोजक भगवतीप्रसाद देवपुरा, कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर और टी.आर..आई. के निदेशक डॉ. एन. एन. व्यास भी हमारे बीच नहीं हैं।

- डॉ. महेंद्र भानावत

मां मेरी

(1)

मां तुमको भी छोड़ गई है
मां मुझको भी छोड़ गई है
आओ साथ बैठें और सोचें
क्या देकर क्या छोड़ गई है?
मां तुमको भी छोड़ गई है।।

चलो मिलकर याद करें अब
मां, मम्मी जीवन में
शब्दों के अक्षरों में कैसे
सार जनम का निचोड़ गई है
मां तुमको भी छोड़ गई है।।

कुछ तो छूटा उसका भी है
कुछ अपना भी छूट गया है
बातें अपने मन की मन से
यूं ही आज झंझोड़ गई है
मां तुमको भी छोड़ गई है।।

फिक्र नहीं अब आवाजों में
प्यार बांधकर भेजे कौन
सीढ़ियों पर दौड़ते कदम
मम्मी और मदर
कहते-कहते हो गए मौन
ख्याल बड़ा ही सादा सा है
जीवन में कुछ आधा सा है
मम्मी अब ना कह पाऊंगी
यही सोच मैं रो जाऊंगी
कैसे दुनिया में लाकर मुझको
खुद ही दुनिया छोड़ गई है
मां तुमको भी छोड़ गई है।।

मां, तू याद बहुत आती है

(2)

आसमान की ऊंचाइयों में
गुरु नानक की बानियों में
सबद आरती के बोलों में
मां, तू याद बहुत आती है।।

खामोश आंखों से चुपचाप
बह जाते हैं ढेरों आंसू
जब कीर्तन के बोल सुनूं मैं
मां, तू याद बहुत आती है।।

जब दुनिया सारी सो जाए
काम भी सारा हो जाए
तकिये के कोने पर लेटे
मां, तू याद बहुत आती है।।

बच्चों की प्यारी बातों में
छोटी लंबी काली रातों में
फिल्मों के पुराने गीतों में
मां, तू याद बहुत आती है।।

मंदिर की घंटी का नाद
दूध दलिए का मीठा स्वाद
जब गाय की रोटी बनती है
मां, तू याद बहुत आती है।।

- प्रेमलता पिंकी वैष्णव

स्मृतियों के शिखर (99) : डॉ. महेन्द्र भानावत

घोसुंडा में कलंगी ख्यालों का दबदबा

घोसुंडा की यादगार यात्रा पहलीबार सन् 1960 में रही जब खाजू बेग कलंगी ख्यालों के जानेमाने उस्ताद थे। उनकी बड़ी प्रभावक मंडली थी जिसमें गाने, बजाने तथा ख्याल प्रस्तुत करने के दक्ष कलाकार थे जो लोगों के बुलावे पर गांवों, कस्बों और शहरों में रात-रात भर ख्याल प्रदर्शित कर जन-जन का स्वस्थ मनोरंजन करते। खाजू बेग कागजी नाम से कागज बनाने का काम करते। इनके हाथ का बना कागज और उसकी बनी बहियां पूरे मेवाड़ और बाहर भी खरीदी जाती।

कहते हैं, कागजी परिवार के सर्वप्रथम शाहअली बेग घोसुंडा आये। वे हरियाणा के नाहर नवल (नारनौल) के रहनेवाले थे। मेवाड़ महाराणा इन्हें कागज बनाने के लिए यहां लाये। वर्तमान में यहां शाहअली के 30 परिवार हैं जो कागजियों के मोहल्ले में बसे हुए हैं। यों यहां बनिया, लोहार, ब्राह्मण, धोबी, नायक, खटीक सबके नाम के अलग-अलग मोहल्ले हैं।

ख्याल ठिकाने :

खाजू बेग से कलंगी ख्यालों तथा चित्तौड़ के चैनराम से तुर्रा ख्यालों संबंधी कई जगह जानकारी प्राप्त की। उनके ख्याल प्रदर्शन भी देखे। मेवाड़ में चित्तौड़, घोसुंडा के अलावा आसींद, कनेरा, बसी, डूंगला, बेगू, निकुंभ, मंडपिया, सावा, भादसौड़ा, निम्बाहेड़ा, आवरीमाता इन ख्यालों के प्रसिद्ध गढ़ थे। दोनों उस्तादों के प्रदर्शनों की होड़ाहोड़ी चलती रहती। दोनों के मानने वाले, चाहने वाले, खेल कराने वाले अपने यहां इनके खेल आयोजित कर खासी वाहवाही लूटते तथा प्रतिस्पर्धा में सवाया रंग बरसाने के लिए सब दांव पर लगा देते।

मुख्य पात्रों के लिए बेशकीमती जेवर, कपड़े लत्तों की झड़ी लग जाती। जहां खेल होता वहां खंभा, झंडी का निशान खड़ा कर दिया जाता। प्रचारक गावणिये चंग पर गांव-गांव प्रचार करते। खेल देखने गांव के गांव टूट पड़ते। अब वह माहौल कल्पनातीत बन गया। उन प्रदर्शनों का रंग केवल 'राजस्थान के तुर्रा कलंगी' नामक पुस्तक में कैद है जिसे मैंने 1968 में लिख प्रकाशित की।

उसके बाद की हवा का झौंका लेने 17 नवंबर 2012 को घोसुंडा जाना हुआ। साथ में थे चित्तौड़ के शिव 'मृदुल' तथा बिटिया डॉ. कहानी और अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता। खाजू बेग ने करीब 75 वर्ष की उम्र ली। उनका निधन 5 मई 1985 को हुआ। अच्छा लगा कि उनके पुत्र अकबर बेग उनकी विरासत को भलीप्रकार संभाले हुए हैं। वे कागजीपन के साथ-साथ कलंगी ख्याल फन के भी उस्ताद बने हुए हैं। घोसुंडा के लोगों पर कलंगी खेलों का रंग अभी भी बरकरार है।

औरंगजेब द्वारा स्तुति-सम्मान :

तुर्रा कलंगी ख्यालों की शुरूआत के बारे में अकबर बेग ने बताया कि सन् 1680 के आसपास तुकनगीर तथा शाहअली दोनों संत प्रभावी थे। वे गाने-बजाने के उस्ताद थे। उनके कई भक्त-शिष्य थे। बादशाह औरंगजेब गाने-बजाने के कट्टर खिलाफ था। चंग पर गाने की छूट थी। तब आगरा राजधानी थी। गायकी (मौसिकी) का जनाजा निकाला गया। बादशाह ने 27 वर्ष दौरे के दरम्यान तम्बू में शासन किया। सन् 1682 में दक्षिण में उसका दौरा था। हैदराबाद के आमूर में बादशाह का तंबू लगा था। वहां उस्तादों की धूम मची थी। गाने-बजाने का ठाठ लगा था। बादशाह ने उन्हें गिरफ्तार करने को कहा। सिपहसलाहकारों ने कहा कि वे तो अपनी मनमौजी से गा रहे हैं। मजमा जमा हुआ है। उन्हें कैसे गिरफ्तार करें?

बादशाह ने जब संतों के प्रभाव को जाना तो उनके सामने तीन दिन का, दोनों संतों का मुकाबला चला। हार-जीत का फैसला नहीं हुआ लेकिन बादशाह बड़ा प्रभावित

हुआ तब सम्मान स्वरूप तुकनगीर को तुर्रा और शाहअली को कलंगी भेंट की। यों तुर्राकलंगी राजा-बादशाह के लगती है। दूल्हे के लगती है। वह एक दिन का राजा कहलाता है। तुर्रे के साथ कलंगी लगती है। दोनों एक-दूसरे से शोभित होते हैं। तुर्रा वीरता की निशानी है। यहीं से जो दोनों संतों के गाने-बजाने की रस्म शुरू हुई, उसका नाम तुकनगीर के साथ तुर्रा और शाहअली के साथ कलंगी नाम से दो प्रतिस्पर्धी संप्रदाय बने जो दल, अखाड़ा अथवा फड़का कहलाये।

हूमा पक्षी के पंख से कलंगी:

कलंगी हूमा पक्षी के पंख की बनाई जाती है। हूमा को हरियल भी कहते हैं। यह जिसके सिर पर बैठ जाय वह राज्याधिकारी होता है। हूमा के इसी महत्व के कारण शिकारी बड़ी सावधानी से उसका शिकार करता है। यह शिकार नीचे जमीन पर नहीं गिरने देकर हाथ में झेलता है। इसकी चर्बी बड़े काम की होती है।

अकबर बेग ने बताया कि हिन्दुस्तान का मुसलमान गाना-बजाना नहीं करे तो क्या करे? अमन तो इसी में है कि वह स्वयं ही नहीं, पड़ौसी भी रंजित हो। उसने पड़ौसी तीन तरह के बताये। पहला वह स्वयं, उसका परिवार, पड़ौसी और रिश्तेदार। दूसरा जिस धर्म को वह माने, उसे उसका पड़ौसी भी माने। तीसरा जो उसके धर्म को नहीं माने वह भी पड़ौसी।

घोसुंडा में कलंगी ख्याल हमीद बेग ने शुरू किए। उसके बाद ख्वाजा अली फिर हसन बेग और फिर खाजू बेग ने इस विरासत को परवान चढ़ाया। उर्दू, अरबी, फारसी में इन्होंने सैकड़ों लावणियां लिखीं। हसन बेग के समय चौथमल हुए। दोनों ने मिलकर रुक्मणी मंगल ख्याल लिखा। घोसुंडा में एक ख्याल में चौथमल राजा बने। रानी का खेल करनेवाला धोखा दे गया। कहीं भाग गया। देखनेवाले आसपास के गांवों से टूट पड़े। चौथमल के हौंस उड़ गये। तत्काल उनकी पत्नी को तैयार किया। सुबह देर तक जो झड़ी लगी कि कुछ कहा नहीं जाता।

वह खेल बड़ा सफल रहा। एक तो मंच पर कोई महिला चढ़ती नहीं। औरत का भेष भी आदमी ही करता है फिर उस महिला को सभी ने पुरूष ही समझा। ऐसी कलाकार थी जिसका भेद अंत तक नहीं खुला। उसके बाद चौथमल महाराज बन दिवाकर चौथमल हो गये। यहां मेड़ी में चौमासा किया। हमने वह मेड़ी देखी जो अब नाई की मेड़ी नाम से आबाद है। दीक्षा के बाद भी उन्होंने कई जैन कथानकों पर ढालें लिखीं। उनका कंठ बहुत मधुर था। सभी जातपांत के लोगों में उनकी प्रतिष्ठा और प्रभाव था। महाराणा फतहसिंह ने भी उनका सान्निध्य लिया और इज्जत बख्शी। जैन दिवाकर की उपाधि इतनी फली कि आज भी वे इसी नाम से जाने जाते हैं।

अन्य अखाडे :

अकबर बेग ने बताया कि खाजू बेग की बड़ी सधी हुई परिपक्व मंडली थी। हफीज बेग, सुलेमान बेग, इस्माल बेग, नाथू बेग प्राय: महिला पात्र के रूप में मुखातीब होते जबकि नजीर बेग, नूरा बेग जनाना नहीं बन मर्दाना ही बनते थे। चैनराम जहां-जहां तुर्रा खेल करते वहां बाद में कलंगी वाले खेल कराते। ऐसे ही कलंगी खेल के बाद तुर्रा वाले बुलाये जाते। यह होड़ाहोड़ी चलती रहती। कभी-कभी समाज के मोतबीरों में तनातनी भी हो जाती।

तुर्रा कलंगी अखाड़े के अलावा इस किस्म के अन्य अखाड़ों का भी इधर प्रचलन रहा। उनमें ऊंडा, डूंडा, छतर, दिलखुश, सफाचट, इश्क, अनगड़ मुख्य थे पर वे उतने प्रभावी नहीं बन पाये। इश्क के भैरूसिंह पावटियावाले, रसूल मंसूरी, नंदराम देरारी, बक्षीराम व्यास; दिलखुश के धनराज गंधर्व ; अनगड़ के लादूराम तोषनीवाल, अंबालाल गंधर्व ; डूंडा के बक्षी बा कलाल जैसे उस्तादों ने बड़ा नाम कमाया। अकबर बेग ने घोसुंडा में इन अखाड़ों का जिक्र करते एक लावणी ही सुनादी-

यह अजब घोसुंडा गाम, है स्वर्ग धाम
जिला चित्तौड़ की नगरी है।
यहां तुर्रा कलंगी दिलखुश
अनगड़ अखाड़े की डिगरी है।।

उदयपुर के शिल्पग्राम में विशाल स्तर पर प्रतिवर्ष दिसंबर में शिल्प मेले का आयोजन विदेश तक में प्रसिद्धि लिए है। अनेक राज्यों के शिल्पी यहां अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर पुश्तैनी कला-संस्कृतिपरक धरोहर से परिचित कराते हैं। अकबर बेग भी कागज निर्माण का प्रदर्शन कर कागजी कला के शिल्प निर्माण से सबको बांधे रखते हैं। मेले में एकबार उनसे भेंट हो गई तो शिल्पग्राम की प्रशंसा में तत्काल उपजा यह कलाम सुनाया-

सुनो सजन गुणवान, लगाकर ध्यान,
शिल्पग्राम निराला है।
बसा पहाड़ों बीच,
पास में गांव हवाला है।।
सुन लेना यहां बारा मास,
तो लगा ही रहता मेला।
हर कलाकार आता है, यहां अलबेला।।
सुंदर मुखद्वार, जाऊं बलिहार,
संस्कृति का उजियाला है।।
सुनो सजन गुणवान .....

विविध गानों की बहार :

घोसुंडा के नाकोड़ा मिष्ठान्न भंडार के बाहर सड़क स्पर्श करती हमारी मिल्लन तीन घंटे चली। अकबर बेग के साथ खिलाड़ी उसमान हुसैन ने भी विविध छंदों भरी गायकी का खजाना खोल दिया। सिंगालोचन, झेला, चौक, मोरधज, खेंच, बहरेतबील, खड़ी, शकिस्ता, एकंगी, अठंगी, अधर, सखी, दौड़ के कई उद्धरण सुनाकर हमें चकित-छकित किये बांधे रखा।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 मई 2020

सम्पादकीय

आत्मीयता का सुदृढ़ीकरण

कोरोना की महामारी मारी-मारी को रोनेरींकने की बजाय उसके बेकडोर को देखें। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कभी एक अन्य सन्दर्भ में लिखा था- 'यदि बाधाएं हुईं हमें तो उन बाधाओं के ही साथ / जिससे बाधा बोध न हो वह सहन शक्ति भी आई हाथ।' सो वक्त अच्छा-बुरा आता है और चलता जाता है।

हिन्दी साहित्य में संयोग और वियोग श्रृंगार थे, अब संयोग ही देखने को मिल रहा है। वियोग कहां रहा? ढूढ़े भी नहीं मिल पा रहा है। सारे लोकगीत, गाथाएं, कथा-किस्से, आख्यान जो विरह व्यथा के आंसू से गंगा-जमनी प्रवाह किये थे, सब धड़ाम ध्वस्त हो गये हैं। युद्धवीर पूरी जिन्दगी घोड़े की कसी जीण पर हर समय अपने को शस्त्र सज्जित किये रहता था, अब घर में ही बैठा जीवनसाथी के साथ शादी के वक्त चंवरी में किया गया वादा निभा रहा है। दोस्ती का, सहचर का पक्कमपक्का धर्म निभा रहा है।

एक कपड़े धो रहा है तो दूसरा सूखा रहा है। एक सब्जी तैयार कर रहा है तो दूसरा उसे चूल्हे पर चढ़ा पका रहा है। एक आटा बेल रहा है तो दूसरा रोटी बना रहा है। एक कचरा बुहार रहा है तो दूसरा पोचा लगा रहा है। एक बता रहा है, मां दलिया ऐसे बनाती थी। खीचड़ी ऐसे तैयार करती थी। पकौड़े ऐसे तलती थी। लपसी-कढ़ी बनाना ऐसे सिखाती थी। दूसरा उससे आगे बढ़ अपनी पाक-शास्त्रीय कला बघारता गुलाब जामुन बनाता है। दिखते वैसे ही पर भीतर रस नहीं जा पाता है। मालपुआ तवी पर चिपक जाता है। रबड़ी खबड़ी हो जाती है।

आदमी के अक्सर व्यस्त रहने पर उसका सगे समधियों से मिलना भी दूभर हो जाता था। जब भी कहीं मिलना होता, यही सुनने को मिलता, होली-दीवाली या छठे चौमासे भी कभी याद नहीं किया। अब वह घर बैठा ठालेराम की तरह प्रतिदिन ही होली, दीवाली, चौमासा लाकर बात का बतंगड़ बनाने में कुशल हो गया है।

यही नहीं, पुराने पांच-छह दशक के मित्रों को याद कर उनके बारे में जानकारी जुटाने में लगा है। जो हरिशरण हो गए उन्हें श्रद्धांजलि देता है और जो भगवान की कृपा लिये हैं, उनसे बात करता है। दोनों बांसों उछलते हैं। कुशलक्षेम पूछते हैं। पुरानी फालतू की कचरपट्टी बातों को याद कर कंचनशील बनाते हैं। सांपों की लापालोर की तरह दोनों एक-दूसरे की प्रशंसा के सेतु बांध बाग-बाग होते हैं।

सुबह-शाम छत पर टहलते हैं जैसे जू में चिड़ी-चीड़े फुदकी मारते हैं या पिंजरे में शेर, चीता, भालू फेरी देते हैं। दिन को पुरानी ताश निकाल रंग खेलते कभी-कभी बेरंग हो जाते हैं। बच्चे-बच्ची होने पर तिकड़ी-चौकड़ी जमती है या फिर बापदादों द्वारा बेमतलब संचित गोदड़े, टूटे-फूटे बर्तन, गाबेछींतरे निकाल टूटी-फूटी पेटियों को साफ-सुथरी कर पुन: जैसी पहले थी वैसी कर देते हैं। सब अनुपयोगी हैं। न उन्हें कोई खरीदने वाला है और न कोई मुफ्त में लेने वाला। ऊपर से बापदादों का मोह सताता है। इनके होने से वे हमारे साथ हैं। उनकी यादगीरी कायम है।

वातावरण शान्त है। सब ओर सन्नाटा है। कई महीनों से कोई तितली नहीं देखी गई थी वह नजर आई है। भंवरा भी कभीक आकर गुंजार देता निकल जाता है। इस बार आकड़ा भी बहुत फूला और पहलीबार उसके इर्दगिर्द नन्ही-सी काली चिड़िया नजर आई। कबूतर बरोबर सुबह मुंडेर पर गटर-गूं करते चोंच लड़ाते दाना चुगते हैं। हवा में सुहाती हवाखोरी है।

टीवी पर पुराने सीरियल याद कर सुख हो रहा है हालांकि तब जो भीड़ उमड़ती थी वह भीड़ तो नहीं रही। सूरज-चांद वे ही हैं मगर उनसे ओपते या उनको ओपित करते बादल, बिजली, धनुष, बरसात, अर्जन-गर्जन सब सपना हो गया है।

कोरोना मेहमान बनकर दस्तक दे रहा है ऐसे में हास्य कवि गोपालप्रसाद व्यास का कथन याद आ रहा है- 'मेहमान से भगवान बचाये।'

कोरोना : कहीं तीसरे विश्व युद्ध की तैयारी तो नहीं?

-अर्जुन तिवाड़ी -

नवम्बर-दिसम्बर में चीन को पता लग गया था कि चीन में कोरोना महामारी फ़ैल रही है। फिर भी चीन ने डब्ल्यूएचओ को सूचना नहीं दी और जब धीर-धीर पूरे विश्व में महामारी फैलने के संकेत मिले तब कहा, हमारे यहाँ कोरोना नाम का वाइरस फैला है। चीन ने इसके फैलने का कारण चमगादड़ बताया लेकिन सत्यता तो यह थी कि चाइना कई दिनों से चमगादड़ों पर शोध कर लैब में वायरस तैयार कर रहा था जो वही किसी व्यक्ति को लग गया और चाइना में फैला।

जब चाइना में फैला तो चाइना को लगा कि कहीं इससे उसकी अर्थव्यवस्था खराब न हो तो उसने डब्ल्यूएचओ को बताया नहीं और पूरे विश्व में फैलने दिया। जनवरी-फरवरी तक चाइना ने देश के हवाई यातायात को दूसरे देशों में जाने से रोका नहीं जिससे चाइना में जो लोग संक्रमित हुए वो घूमते रहे और कोरोना पूरे विश्व में फैलता रहा।

चीन ने, अपने यहां तो चार महीने का लोकडाउन किया और अर्थव्यवस्था खराब ना हो इसलिए विश्व के बड़े-बड़े देश अमेरिका, स्पेन, जर्मनी, इटली जैसे देश भी संक्रमित कर डाले।

चाइना का खेल यहीं से प्रारंभ होता है। उसने बड़ी-बड़ी कंपनियों के शेयर खरीदना चालू किया परंतु भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यह सारा खेल समझ गए और उन्होंने एफडीआई पर रोक लगा दी, जिससे चाइना के राष्ट्रपति शी जिनपिंग बोखला गए।

चाइना का खेल यही नहीं रुका। उसे सबसे मजबूत और पावरफुल राष्ट्र होने की लालसा में विश्वभर में कोरोना के नकली टेस्टिंग किट भेज दिये जिससे वर्ल्ड में कोरोना की रिपोर्ट सही नहीं आयी और सभी देशों का विश्वास चाइना से उठता गया।

पहले युद्ध तलवारों से होता था फिर बम-परमाणु बम और मिसाइल से होने लगे लेकिन अब चाइना वायरस को फैलाकर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को तबाह कर के तीसरे विश्व युद्ध की तैयारी में है। बार-बार अमेरिका के राष्ट्रपति और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री द्वारा वुहान लैब के निरीक्षण करने के मसले को चाइना मना कर रहा है क्योंकि चाइना की पोल लैब के निरीक्षण सें खुल सकती है।

उसने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को तबाह कर खुद के सारे मार्केट खोल दिए हैं, जिससे कि उसकी अर्थव्यवस्था मज़बूत बनी रहे ।

लेकिन, भारत ऐसा देश है जो पूरे विश्व के कल्याण की सोच रहा है। वसुधैव कुटुंबकम् की बात करने वाला भारत अपने देश के लोगों को बचाने के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों की भी मदद करने में भी लगा है जबकि चाइना पूरी दुनिया को कोरोना की आड़ में तीसरे विश्व युद्ध में झोंकने की तैयारी में है।

कोरोना पर चार कविताएं

-डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'-

(1)

यह समय सपना नहीं है

अब यह जरूरी हो गया है,
मौसमों को यह बताना
आदमी अपना नहीं है।
यह समय सपना नहीं है।।
कल जहां पद-तल धरा थी
अब वहां आकाश है।
खुल गए सब पंख इतने
पर न सुलझा पाश है।
इसलिए मैं चाहता हूं
चांद-तारों को बताना
आदमी अपना नहीं है।
यह समय सपना नहीं है।।
है नहीं विश्वास कल पर
बात क्यों युग की करें?
हर शिखर जलता, हिमानी
प्यास क्यों घट में भरें?
क्या करेंगे सिन्धु का, जब
जूझना ज्वालामुखी से।
नभ तले तपना नहीं है।
आदमी अपना नहीं है।
यह समय अपना नहीं है।।

(2)

वह है असीम

वह है असीम, वह है अपार
सुन्दर स्वरूप, पर निराकार।।
अनिलानल, रवि-शशि-तारा-ग्रह
नीलम-नीरधि, यह शून्य गगन,
वन-उपवन-मरु, उत्तुंग अचल
निस्तब्ध नियति का शन्ति-सदन,
'वह अंत-हीन, अक्षय अनादि'
इन सबका यह संतुलित सार।
वह है असीम, वह है अपार
सुन्दर स्वरूप, पर निराकार।।
आ जाते लहर-लहर बादल,
छा जाते उमड़-घुमड़ बादल
परिवर्तन हो चलता प्रति पल,
मच जाती विश्व नई हल-चल
'अभिनय की सीमा वह असीम'
संदेश सुनाती सलिल धार।
वह है असीम, वह है अपार
सुंदर स्वरूप वह निराकार।।
नौका पर बैठे नाविक के,
अलसाए नयन भटक जाते।
'सागर का कोई छोर मिले'
खोजते-खोजते थक जाते।
होकर फिर वह विस्मय-विभोर
कह उठता- 'वह सचमुच अपार।'
वह है असीम, वह है अपार
सुंदर स्वरूप पर निराकार।।

(3)

हृदय खोल कर दान दो

'कोरोना' से मत डरो,
करो बुद्धि से काम।
हृदय खोल कर दान दो,
रहकर अपने धाम।।
झोली छोटी मत करो,
खोलो दिल के द्वार।
हर भूखे को अन्न हो,
कोरोना की हार।।
खड़े-खड़े क्या देखते,
तट कितना है दूर?
पुण्य-नदी की धार में
कूदो बन कर शूर।
आज दान का यह समय
जिसका पुण्य अपार।
रक्षा मानव जाति की,
बहुत बड़ा उपकार।।
जागो! ईश्वर ने दिया,
तुमको द्रव्य अनंत।
हृदय खोल सब बांट दो,
बन तुलसी-सा संत।।

(4)

दीया जल रहा है

हवा से न खेलो, दीया जल रहा है।
मिटाने 'कोरोना' अचल चल रहा है।
जहां भी रहो तुम नहीं संक्रमण हो।
रहें दूर हम सब,
मिलने का न क्षय हो।।
उपचार है यही, सुफल, फल रहा है।
हवा से न खेलो, दीया जल रहा है।।
घरों से निकल जो, सड़क पर खड़े हैं।
बने भीड़ सबके, मरण पर अड़े हैं।।
बचाता उन्हें भी, स्वयं गल रहा है।
हवा से न खेलो, दीया जल रहा है।।

150 विधवाओं को राहत सामग्री वितरित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना महामारी के चलते नगर निगम महापौर जी. एस. टांक ने प्रेरणा किचन प्रांगण में 150 विधवाओं को राहत सामग्री वितरित की।

प्रेरणा किचन के संचालक गिरीश भारती ने बताया कि राहत सामग्री में पांच किलो आटा, दो किलो चावल, एक किलो चना दाल एवं 500 ग्राम तेल वितरित किया गया। यह राहत सामग्री राताखेत, गवरीचौक, सज्जननगर, भीलूराणा कॉलोनी, 80 फीट रोड, एकलव्य कॉलोनी एवं चंपा कॉलोनी की विधवाओं को वितरित की गई। इस दौरान सभी महिलाओं को मास्क वितरित किए गए।

राजस्थान क्लीनिक रामपुरा के सहयोग से विधवा महिलाओं की स्वास्थ्य जांच की गई। इसके बाद महापौर द्वारा सोशल डिस्टेंसिंग की पालना करते हुए राहत सामग्री बांटी गई। इस मौके पर समाजसेवी नरेंद्र राठौड़, उपेंद्र शर्मा, ओमप्रकाश कुमावत, यशवंत जोशी, दिनेश वसीटा, दिनेश चौधरी, प्रदीप निमावत, यशवंत सांवरिया, मीना भारती एवं अनुश्री तंबोली उपस्थित थे।

जार की पहल पर राज्य सरकार द्वारा तत्काल 50,000 रूपये का सहयोग

उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)। हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार और पत्रकार

औंकारश्री की विधवा पत्नी सूर्या पारीक को राजस्थान सरकार द्वारा 50,000 रूपये की सहायता प्रदान की गई। इस सहायता के लिए जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार), उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा विशेष पहल की गई थी।

डॉ. भानावत ने गत 18 अप्रेल को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को एक पत्र लिखकर मांग की थी कि स्वर्गीय पारीक की पत्नी सूर्या पारीक मूत्र रोग तथा अन्य व्याधियों से पीड़ित एवं असहाय है। उनके परिवार में मात्र इकलौता पुत्र पवन है जो मानसिक रूप से कमजोर है अत: उन्हें तत्काल सहायता प्रदान की जाय।

इस पहल पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा स्थापित राजस्थान साहित्यकार और पत्रकार कल्याण कोष की तरफ से 50,000 रूपये की सहायता राशि श्रीमती पारीक के खाते में स्थानांतरित कर दी गई। यही नहीं इस पहल पर उनके साहित्यिक मित्रों, समाजसेवियों तथा शुभेच्छुओं ने भी सहयोग किया। जार के सभी सदस्यों ने इस सहयोग के लिए सरकार तथा अन्य जनों के प्रति विनम्र आभार व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि औंकारश्री पूर्व में राजस्थान साहित्य अकादमी में सहायक सचिव तथा राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी में सचिव रह चुके हैं।

सेठ, गरीब और आम आदमी

-जगदीश विजयवर्गीय 'शब्दानन'-

सेठ को गुमान था
बहुत पैसा है मेरे पास
गाड़ी, बंगला, नौकर-चाकर
जो चाहूं कर सकता हूं
जिसे चाहूं खरीद सकता हूं
गरीब को गुमान था

बहुत मेहनती हूं मैं
सरकार का वोटबैंक हूं मैं
तमाम सरकारी योजनाएं हैं
सिर्फ मेरे लिए
सरकारी तिजोरी का अकेला
हकदार हूं मैं
मगर...
सेठ का कारखाना बन्द हो गया
कमाई का चढ़ता ग्राफ पल में उतर गया
कोरोना संक्रमण ने हाल ऐसा कर दिया
बस बंगले में कैद होकर रह गया
गरीब का रोजगार छिन गया
मेहनत के ठिकाने पर ताला पड़ गया
जेब में जो धेला था, वह भी खर्च हो गया
सरकार के भरोसे रहा, 'अनाथ' हो गया
आम (मध्यम) आदमी को गुमान न था
वह संघर्ष करना जानता था
बस इस संघर्ष पर ही विश्वास था
हर परिस्थिति में ढल जाता था
ढल गया...

लॉकडाउन : नए संकल्पों के साथ सकारात्मक कदम

-डॉ. प्रियंका शर्मा-

आज लॉक डाउन जैसे शब्द की ध्वनि की आहट मेरे घर के द्वार पर ही नहीं बल्कि शहर के प्रत्येक घर के द्वार को खटखटाती सी सुनाई दे रही है। यह शब्द किसी ध्वनि की तरह लग रहा है, जो मानो चारों ओर शून्य स्थान को ध्वनित कर बार-बार वापिस मेरी ओर ही आ रहा हो। जीवन की कर्मभूमि में सुबह 4 बजे से ही दौड़ धूप आरंभ करनी है। परिवार व बच्चों के दायित्वों का निर्वहन करते हुए महाविद्यालय में चल रही परीक्षाओं की ड्यूटी को भी भलीभाँति पूरा करना है।

इसी सोच के साथ मैने अपनी दिनचर्या आरंभ की लेकिन महाविद्यालय की सुबह की परीक्षा पूर्ण होते-होते यह खबर आग की तरह फैलने लगी कि शेष परीक्षाएं निरस्त होने वाली हैं। सभी को अपने-अपने घरों में रहते हुए एक दूसरे से दूरी बनाकर नागरिकों के जीवन को बचाए रखना है।

सम्पूर्ण विश्व में एकसाथ ऐसी घटना घटित हुई। एक वायरस ने सभी के व्यस्त जीवन को एक लम्बे विश्राम पर लाकर खड़ा कर दिया। सभी जन एक स्टेच्यू की भाँति रूक गये। एक वायरस का एक साथ फैलना सम्पूर्ण विश्व को एक साथ नियंत्रित करने की एक साजिश सी दिखाई दे रही है। जहाँ एक विचार पर दो व्यक्तियों का सहमत होना भी कठिन लगता है, वहां सम्पूर्ण विश्व इस महामारी से लड़ने के लिए एकसाथ होता नजर आ रहा है।

समाचारों के माध्यम से जब कोविड-19 (कोरोना) वाइरस के फैलने के समाचार सुनते हैं तो मन में एक भय सा व्याप्त हो जाता और गहरी चिंता में पड़ जाते हैं कि अब क्या होगा। देश के प्रधानमत्री द्वारा जन-हित को ध्यान में रखते हुए देश में 21 दिन (14 अप्रेल 2020 तक) के लोकडाउन की घोषणा की गई तब सभी के मन में यही था कि 14 अप्रेल तक सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा, लेकिन इस वायरस का प्रसार तो द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ता ही जा रहा है। दूसरे चरण में लोकडाउन को तीन सप्ताह अर्थात् 03 मई तक बढ़ाया गया। इसे सभी ने कोरोना को भगाने के लिए हृदय से कृतसंकल्प होकर स्वीकार किया।

इस कठिन समय में लॉकडाउन के बावजूद भी जरुरी सेवाओं को आवश्यकतानुसार कुछ छूट भी दी गई। प्रधानमंत्रीजी ने समय-समय पर देश के नाम सम्बोधन से जनता के उत्साह और आत्मविश्वास को प्रबल बना दिया। इस बीच लगा कि हर नकारात्मकता के साथ हमें सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। जिस भागदौड़ की जिंदगी में हम बच्चों व परिवार को समय ही नहीं दे पाते हैं, शायद यही वह सुअवसर है जिसे हम स्मृतिपुंज बना सकते हैं।

इसी सकारात्मक सोच के साथ अपने पूरे समय को परिवार के साथ रह कुछ सिखने, कुछ सिखाने, रचनात्मकता के साथ कुछ सेवाकार्य करने का मन बनाया। कभी मोदीजी के आग्रह पर दीपक जलाकर उनकी जलती हुई शिखा से आशा की किरणों को प्रज्वलित होते देखा। लगा जनमानस में कोरोना रूपी राक्षस को हरा कर मानो दीपावली का ही पर्व मनाया जा रहा है। कहीं शंख, थाली, घंटी आदि मंगल वाद्ययंत्रों द्वारा देश के कोन-कोने से जागृति व संगठित होने का संदेश सुनाई दे रहा था।

परिवार में सभी माताओं ने इस समय को अपनी पाक कुशलता से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने एक अलग ही चुनौती के रूप में स्वीकार किया। मैने भी रसोई की पाक-कला में निपुण होने के कई प्रयास किए। मन में उत्साह रहता था कि मैं अनेक व्यंजनों के माध्यम से सभी से प्रशंसा बटोरने के साथ ही कुछ सिखने का प्रयास भी जारी रखूँ।

इस समय में हमारी सभ्यता, संस्कृति के प्रतीक रामायण व महाभारत जैसे धारावाहिकों को बच्चों व परिवार के साथ फिर से रसास्वादन करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। यह नई पीढ़ी के लिए आवश्यक भी था, क्योंकि जो पढ़ाया जाता है उससे कहीं ज्यादा प्रभावकारी कहानी के माध्यम से दृश्य-स्मृति में ज्यादा स्थायी रह पाता है।

इस समय हमने कैरम, लूडो, सांप-सीढ़ी, अन्त्याक्षरी, बेडमिन्टन जैसे इंडोर खेलों को भी अपना कर एकसाथ बैठकर आनन्द का अनुभव प्राप्त किया। मन में यह भाव आया कि वास्तव में सच्चा सुख व आनन्द तो इस तरह से परिवार के साथ रहने में ही है। मन में यह विचार भी आया कि यह महामारी कोई प्रकृति या परमात्मा की लीला है जिसने हमें इस तरह रहना सिखाया है।

इस समय शिक्षा क्षेत्र में नई क्रांति का आगाज भी हुआ। बालकों को विद्यालय जाने की बजाय शिक्षक स्वयं ऑनलाइन के माध्यम से बालकों तक पहुंच रहे हैं। एक शिक्षक होने के नाते मैंने भी ऑनलाइन क्लास का अनुभव प्राप्त किया। बच्चों व अध्यापकों को भी नई तकनीक से रू-ब-रू होने का अवसर प्राप्त हुआ। सच ही है मन से कुछ करने का जज्बा हो तो व्यक्ति पत्थर से भी पानी निकाल सकता है।

कान्यो मान्यो

कावड़ रौ पाठ

कान्यो दो दन तांई बालश्रम री एक कार्यशाला मांय पोंचग्यो। वठै वींरौ एक कावड़ बांचणिये भाट बावजी सूं परिचै करायो। वींरी कावड़ देख कान्यो कावड़ वाचो वणा'र वींनै प्यार कीधौ। कार्यशाला रे दूजै दन केई बड़ा साब आया। भाटजी कावड़ बांची। वींरौ बाचण सगळा सूं सवायो रियौ। साब लोग भूरी-भूरी, लाल-पीली, नारंग्यां नै केसर वरणी भांत-भांत री परसंसा कीधी जदी भाट बावजी हाथ जोड़ इनाम लेती वगत क्यो कै माराऊं वधोतरी मैणत तो कान्याजी री है जणां मनै पानो लिखर कावड़ रो पाठ रटायो नै बांचण री तरकीब बताई। ई खातर म्हूं म्हारो सगळो इनाम कान्याजी नै दैवण खातर वांनै मंच माथै आवण नै नूतो देऊं।

साब बोल्या, भाटजी थांरो इनाम तो थांणै पांई राखौ। म्हैं कान्याजी ने भी थारै साथै सनमान दैवणो चावां। कान्याजी मंच माथै आया। वांनै टीलो काड़ पागड़ी बंधाई। खांधा माथै शॉल सराई नै नकद राशि रो लिफाफो दीधौ। वीं टैम समारो मांय मान्यो कठूं आव परो। वो वींरै गळे लागग्यौ। कान्ये भाटजी कन्ने सूं पानो लीधो। मान्यो बांचण ढूक्यो। सगळा फैर सुणवा लागा नै कान्या-मान्या री जैजैकार हुवण लागी। कावड़ बाचण रौ पाठ इण मुजब हो-

– पैली समरूं सरसती दूजो देव गणेश।
तीजो सरवण सुत भलो जय-जय भारत देश।।
– यो सरवण कुण?

वोई जो आपणी कावड़ मांय आपणां आंधा मां-बाप नै बिठाय तीरथां कराई। वींरो नाम आखा जुग में अम्मर हुयो तो गाम-गाम वींरी कावड़ बंचै।

– या कावड़ कांई हुवै?

या कावड़ एक मंदरिया है। कावड़िया भाट इन्नै बगल मांय लै'र मोरपंख री छुवण दै घर-दीठ-घर जावै अर धरम री कावड़ बांचै। वो बोलै-

–सारे जहां से अच्छा हिन्दोसतां हमारा।
टाबर यहां का सरवण मां-बाप का सहारा।।

अणीज खातर आपणो देश आखी दनियाऊं आछो केवायो। अठारो हर टाबर सरवण पूत है जो आपणां मावड़-बावड़ री भगवान ज्यूं सेवा करे।

– कलजुग रा है तीन देव
गुटखा बीड़ी चाय।
यां सूं बचियो सब जणां
जीवन कर दे हाय।।
–छोरो घर रो दीवलो
छोरी नी है फंद।
– यो घर दीपै आपणो
वा पण देय सुगंध।।
– बालाश्रम में भेज बाल ने
श्रम सूं राखो दूर रे।
खेलै कूदै मौज मनावै
भणै पड़ै भरपूर रे।।

– डॉ. महेंद्र भानावत

इंढ़ाणी

-नन्दकिशोर शर्मा-

मांड प्रदेश में एक साहूकार रहता था। उसके घी की दुकान थी। उस गाँव की औरत घी का घड़ा भर कर साहूकार के यहाँ बेचने के लिए आई। साहूकार ने घी का घड़ा खाली कर अपने बर्तन में घी डाला तथा उसका तोल करने लगा। घड़े को वापस उसे इडोणी पर रख दिया। थोड़ी देर में उसने देखा घड़ा घी से वैसे ही भरा है। उसने दो तीन बार ऐसा किया। वह घड़ा खाली करता लेकिन वह पुन: भर जाता। वह समझ गया इसमें घी वाली महिला की इंढ़ाणी में करामात है। तब उसने उससे कहा कि तुम इंढ़ाणी और घड़े के पैसे ले लो और इसको यहीं छोड़ जाओ। वह मान गई। तब सेठ ने महिला को चाँदी की चवन्नी दी। वह खुश होकर घर चली गई। लेकिन साहूकार इस इंढ़ाणी से मालामाल हो गया। क्योंकि उसे यह मालूम हो गया था कि यह इंढ़ाणी (अराई) जो मांड प्रदेश में उगने वाली चितराम बेल की बनी हुई है। इस संबंध में न तो वह जानता था न वह महिला जानती थी। साहूकार मालामाल हो गया। उसने इस धन से एक जैन मन्दिर बनाया तथा अनेक धार्मिक एवं सामाजिक कार्य किये।

इंढ़ाणी गोल आकार की कपड़े, रस्सी एवं मूंझ की बनाई जाती है। पानी का घड़ा तथा अन्य भारी सामान सिर पर रखने के लिए बनाई जाती है। चित्रराम बेल प्रकृति प्रदत मांड प्रदेश में मगरों के ऊपर उगने वाले घास-फूस तथा पौधों के साथ उगती है।

आईसीआईसीआई बैंक ने राजस्थान सरकार के साथ एकजुटता दिखाई

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई बैंक ने कोविड-19 महामारी के मद्देनजर राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के प्रति एकजुटता दिखाई है। बैंक ने इस दिशा में राजस्थान सरकार के अथक प्रयासों के प्रति अपना सहयोग दर्शाते हुए राज्य सरकार, अस्पतालों और पुलिस बलों को सुरक्षात्मक उपकरण प्रदान किए हैं।

आईसीआईसीआई बैंक के हैड-गवर्नमेंट बैंकिंग सौरभ सिंह ने कहा कि बैंक इस मोर्चे पर अधिकारियों के साथ सक्रिय रूप से काम कर रहा है। बैंक ने जयपुर, उदयपुर, कोटा, अजमेर, जोधपुर, डूंगरपुर, दौसा, नागौर, चित्तौड़गढ़ और झालावाड़ में 66,000 थ्री-प्लाई सर्जिकल मास्क, 8,900 एन95 मास्क, 5000 लीटर सैनिटाइजर, 900 से अधिक पीपीई सूट जैसे सुरक्षात्मक उपकरण प्रदान किए हैं। बैंक ने उदयपुर और कोटा के नगर निगमों को 70 थर्मल स्कैनर भी प्रदान किए हैं। यह पहल महामारी से निपटने के काम में जुटे फ्रंट-लाइनर्स की सहायता के लिए विभिन्न सुरक्षात्मक उपकरणों के योगदान के लिए शुरू किए गए बैंक के राष्ट्रव्यापी अभियान का हिस्सा है। इसके अलावा, राजस्थान मुख्यमंत्री रिलीफ फंड और जयपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी के लिए योगदान के डिजिटल संग्रह में भी बैंक राजस्थान सरकार को सुविधा प्रदान कर रहा है। उदयपुर में आईसीआईसीआई आरएसईटीआई पीपीई किट्स और मास्क तैयार करने में जिला प्रशासन को सहयोग कर रहा है। आरएसईटीआई केंद्र के छात्रों ने उदयपुर जिला परिषद के लिए लगभग 5,000 पीपीई किट्स और 26,000 से अधिक मास्क तैयार किए हैं।

हाइब्रिडकूल सीरीज एयर कूलर लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। ग्रुप एसईबी इंडिया के अग्रणी प्रतिष्ठान महाराजा व्हाइटलाइन ने नई श्रेणी हाइब्रिडकूल सीरीज का एयर कूलर लॉन्च किया है।

यह वुड वूल (घास) और हनी काम्ब (मधुकोष) पैड दोनों होने की अनूठी और अभिनव अवधारणा से लैस है, जो एयर कूलर को अत्यधिक कुशल और टिकाऊ बनाता है और गर्मियों में हर घर के लिए एक आदर्श है। ये नए एयर कूलर फैशनेबल लुक और विभिन्न रंगों के सम्मिश्रण के साथ विभिन्न प्रकार के आकारों में मैनुअल और रिमोट से संचालन के विकल्पों के साथ पूरे भारत में एसईबी इंडिया के सभी 750 वितरकों और 40000 डीलरों के पास तथा ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों पर 15199 से लेकर 17199 रुपये की कीमत में उपलब्ध होंगे।

हाइब्रिडकूल का निर्माण भारतीय उपभोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है जो कुशल तथा अधिक ठंडा करने वाला कूलर चाहते हैं जो टिकाऊ और उच्च वेग से हवा फेंकने वाला भी हो।

जेके टायर में आंशिक रूप से परिचालन शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. ने भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा दिशा निर्देश जारी करने एवं क्रमश: राज्यों की सरकारों एवं स्थानीय अधिकारियों द्वारा इजाजत दिए जाने के बाद अपने परिचालनों को आंशिक तौर पर चालू करने की घोषणा की है। जेके टायर ने चेन्नई (तमिलनाडु), कांकरोली (राजस्थान) और लश्कर (केवेडिंश इण्डस्ट्रीज लि. उत्तराखण्ड की उप निर्माण इकाई) के माध्यम से चरणबद्ध तरीके से अपने उत्पादन कार्यों को शुरू कर दिया है। कम्पनी ने अपने ग्लोबल रिसर्च हब एण्ड डेवलपमेंट हब, रघुपति सिंघानिया सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस मैसूर, कर्नाटक में भी परिचालन कार्य आरंभ कर दिए हैं।

भारत और मैक्सिको में जेके टायर के बाकी बचे निर्माण संयन्त्रों निर्माण कार्य शुरू करने की प्रक्रिया जारी है और शीघ्र ही वहां भी परिचालन फिर से शुरू किए जाएंगे। सभी निर्माण इकाइयों में कड़े उपाय, सुरक्षा, सफाई और सोश्यल डिस्टेंसिंग का सख्ती से पालन किया जाएगा। सूचीबद्ध निर्माण इकाइयों में केवल आवश्यक कर्मचारियों को प्रवेश की इजाजत होगी बाकी कर्मचारी जो कि कॉरपोरेट ऑफिस, सेल्स ऑफिस एवं अन्य संयन्त्रों में कार्यरत थे उन्हें अग्रिम सूचना तक घर रह कर काम जारी रखना होगा।

जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. के चेयरमेन एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि एक राष्ट्र के रूप में, हम एक चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं, फिर भी यह जरूरी है कि हम फिर से सही संतुलन हासिल करने के प्रयास में छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण कदम उठाएं। ऐसे में जब हम अपने निर्माण परिचालनों को फिर से शुरू करने जा रहे हैं, तो हम अपने कर्मचारियों और समुदायों की सुरक्षा एवं कल्याण के लिए भी प्रतिबद्ध हैं और यह हमारे पुर्ननिर्माण योजना का प्रमुख महत्वपूर्ण ध्येय भी है।

नमन ने की असहाय मजदूरों के लिए भोजन सेवा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। उदयपुर निवासी 17 वर्षीय नमन अग्रवाल कोरोना आपदा में लोगों की मदद के लिए आगे आये हैं। उन्होंने टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए इंटरनेट के माध्यम से कोरोना महामारी में मदद के लिए 2 लाख रुपये से अधिक की जुटाई। यह राशि उन्होंने क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म द्वारा एकत्रित की।

नमन एक स्वयंसेवी संस्था के साथ जुड़े हुए हैं और इस संस्था के माध्यम से जुटाई गई राशि से असहाय मजदूरों के लिए भोजन सामग्री तथा हाइजीन किट मुहैया करवाया गया। नमन ने इससे पहले भी कैंसर पीड़ितों और थैलेसीमिया मरीजों की मदद की है। उल्लेखनीय है कि नमन अग्रवाल मेयो कॉलेज अजमेर में कक्षा 11वीं में अध्ययनरत हैं।

इंश्योरेंसदेखो की एक लाख से अधिक एजेंट्स जोड़ने की योजना

उदयपुर (विज्ञप्ति)। इंश्योरेंसदेखो ने मौजूदा वित्त-वर्ष में 1,200 करोड़ रुपए के नए प्रीमियम हासिल करने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान में 350 से अधिक शहरों में कंपनी के पार्टनर्स हैं और यह 12,000 से अधिक पार्टनर्स के साथ काम करती है। मौजूदा वित्त-वर्ष में कंपनी की आक्रामक रुप से विस्तार करने की योजना है, जिसमें पूरे देश भर में 1 लाख एजेंट्स को जोड़ना शामिल है।

इंश्योरेंसदेखोडॉटकॉम के सीईओ अंकित अग्रवाल ने कहा कि मौजूदा परिवेश में, इंश्योरेंसदेखो का पूर्वानुमान है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर ग्राहकों का झुकाव तेजी से बढ़ेगा। अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) इनेबल्ड प्लेटफॉर्म के साथ, इंश्योरेंसदेखो इस बदलाव का लाभ उठाने के लिए सबसे बेहतर स्थिति में है। इंश्योरेंसदेखो का प्लेटफॉर्म इंश्योरेंस बिक्री को एक संवादात्मक और शैक्षणिक अनुभव बनाता है। 25 बीमाकर्ताओं से 50 से अधिक मोटर और हेल्थ इंश्योरेंस प्लान्स के साथ यह विकल्पों का एक विस्तृत समूह एजेंटों के लिए उपलब्ध कराता है। कंपनी ने एक सशक्त कस्टमर केयर टीम तैयार की है और पॉलिसी की पूरी अवधि के दौरान एजेंटों की मदद करने के लिए मालिकाना हक वाली टेक्नोलॉजी भी विकसित की है।

'टोटल कन्ट्रोल हेण्ड सेनिटाइजर' का उत्पादन शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. ने 'टोटल कन्ट्रोल हैण्ड सेनिटाइजर' ब्राण्ड के नाम से हैण्ड सेनिटाइजर का निमार्ण शुरू कर राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है।

जेके टायर एण्ड इण्डिस्ट्रीज लि. के चेयरमैन एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर टोटल कन्ट्रोल हैंड सेनिटाइजर महामारी का मुकाबला करने में सरकार के चल रहे राहत उपायों के लिए हमारा नवीनतम योगदान है। इस सेनिटाइजर को मानकों के अनुसार सख्ती से विकसित और उत्पादित किया जा रहा है। जेके टायर ने इस सेनिटाइजर को अपने ग्लोबल टेक सेन्टर द रघुपति सिंघानिया सेन्टर ऑफ एक्सीलेंसी मैसूरू में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार विकसित किया है तथा इसके लिए समस्त अनुमति एवं लाइसेंस लेने की प्रक्रिया को आठ दिन के रिकॉर्ड समय में प्राप्त किया है। कम्पनी इस सेनेटाइजर का निर्माण जेके ग्राम कांकरोली राजस्थान स्थित अपने संयन्त्र पर करेगी। इसके साथ ही अपने राहत प्रयासों के तहत कम्पनी इसका वितरण स्थानीय समुदायों के माध्यम से करेगी। यह सेनिटाइजर पूरे ईकोसिस्टम में उपलब्ध होगा, जैसे डीलर नेटवर्क और और चैनल पार्टनर्स ताकि उचित स्वच्छता सुनिश्चित की जा सके।

पारस जे. के. हॉस्पिटल में दो साल के बच्चे का दुर्लभ हार्ट ऑपरेशन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में दो साल के बच्चे का दुर्लभ हार्ट ऑपरेषन किया गया।

हृदय सर्जरी रोग विशेषज्ञ डॉ. जी. चन्द्रशेखर ने बताया कि लालसिंह को जन्म के समय से ही मां का दूध पीने में परेशानी और शरीर नीला पड़ने की शिकायत थी। इस कारण माता पिता उसे पूर्व में दिल्ली व जोधपुर के कई अस्पतालों में लेकर गये। चिकित्सकों ने टेट्रोलॉजी ऑफ फैलोट बीमारी के बारे में बताया जो एक दुर्लभ जन्मजात हृदय रोग है। इसमें वीएसडी, प्लमोनरी वाल्व स्टेनोसिस के साथ महाधमनी भी अपने स्थान पर नहीं होती है और दायें वेट्रीकल की दीवार भी बहुत मोटी होती है। अर्थात हृदय में एक साथ तीन विकृतियां होती है।

गत दिनों किसी परिजन के कहने पर उन्होंने बच्चे को उदयपुर के पारस जे. के. हॉस्पिटल के शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. मनोज अग्रवाल को दिखाया। यहां डाक्टर ने उन्हें बीमारी व उसके उपचार के बारे में विस्तार से समझाया कि इस प्रकार की दुर्लभ बीमारी लाखों में किसी एक बच्चे को होती है। वर्तमान युग की आधुनिक तकनीक के द्वारा बच्चा पूर्णरुप से स्वस्थ हो जायेगा।

डॉ. जी. चन्द्रशेखर ने बताया कि इस प्रकार के मरीजों का मात्र सर्जरी के द्वारा ही उपचार संभव है। इसके लिए मरीज के ऑक्सीजन का स्तर ठीक किया जाता है इसके बाद उपचार किया जाता है। इसमे चारों हृदय रोगों का एक साथ ही ऑपरेशन करके उपचार किया जाता है। उपचार में राईट व लैफ्ट पम्पींग चैम्बर के छेद को बंद किया जाता है व प्लमोनरी वाल्व को अपनी सामान्य अवस्था में लाया जाता है। महाधमनी जो अपने स्थान पर नही होती उसे भी ऑपरेशन द्वारा सही जगह लाया जाता है। साथ ही दायें वेट्रीकल की दीवार की मोटाई को भी सही किया जाता है। इन चारों बीमारीयों को एक साथ ऑपरेशन के द्वारा सहीं किया जाता है।

कार्डियक एनेस्थिशिया विशेषज्ञ डॉ. नीतिन कौशिक ने बताया की लाल सिंह का ऑपरेशन गत दिनों किया गया। बच्चा अब वह पूर्णरुप से स्वस्थ है। हम सबने मिलकर उसका दूसरा जन्मदिन अस्पताल में सोश्यल डिस्टेन्सिंग का पालन करते हुये मनाया और उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

हॉस्पिटल के फैसेलिटी डायरेक्टर विश्वजीत ने बताया कि कोरोना के दौरान इस दुर्लभ सर्जरी को सफलतापूर्वक करने पर मैं चिकित्सकों की टीम को बधाई देता हूं। अस्पताल इस दौरान पूर्ण रुप से सुरक्षित है व सभी प्रकार के उपचार करने के लिए 24 घंटे तैयार है।

ऊबर ने लाखों पीपीई किट्स वितरित किये

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोविड-19 की महामारी के दौरान राईडर्स एवं ड्राईवर्स के सुरक्षा स्टैंडर्ड मजबूत करने के लिए ऊबर ने विस्तृत उपाय प्रस्तुत किए। इनके तहत ड्राईवर्स को लाखों पीपीई किट्स का वितरण किया जा रहा है और उनके लिए एक सेफ्टी अवेयरनेस एजुकेशन वीडियो प्रस्तुत किया गया है।

हेड ऑफ सेंट्रल ऑपरेशंस ऊबर इंडिया एसए पवन वैश ने कहा कि ऊबर के नए इन-ऐप सेफ्टी फीचर से ड्राईवर्स को एक निश्चित संख्या में ट्रिप्स पूरी कर लेने के बाद अपनी पीपीई सप्लाई को पुन: एकत्रित करने की सूचना मिलेगी। इस सूचना में सुविधाजनक पिकअप प्वाईंट्स की सूची दी जाएगी तथा जब वो अपने लिए सुविधाजनक प्वाईंट चुन लेंगे, तब उन्हें एक क्यूआर कोड मिलेगा। पिकअप के स्थान पर एक ऊबर कार्यकर्ता इस क्यूआर कोड को स्कैन करेगा तथा पीपीई सप्लाई ड्राईवर को दे देगा।

ऊबर ने 3 मिलियन से ज्यादा तीन-प्लाई फेस मास्क, 1.2 मिलियन शॉवर कैप, 200,000 बोतल डिसइन्फैक्टेंट एवं 200,000 बोतल सैनिटाईज़र्स मंगाए हैं, जो भारत में ड्राईवर पार्टनर्स को निशुल्क दिए जाएंगे। यदि ड्राईवर आवश्यक पीपीई खुद मंगाना चाहते हैं, तो ऊबर उन्हें उसकी लागत लौटा देगा। पीपीई किट्स का वितरण ग्रीन एवं ऑरेंज ज़ोंस में लॉकडाऊन में रिलैक्सेशन दिए जाने के साथ ही प्रारंभ कर दिया गया था।

घोसुंडा में कलंगी.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

बिना होठ हिलाये, दोनों होठों के बीच खड़ी सुई या सलाई रख सफलतापूर्वक गाना अधर रकारी कहलाता है। कलाकार उस्मान ने इसका प्रदर्शन कर गाना सुनाया-

हर जस जस अत सरस सरस हर,
अखल अचल जल थल दर दर।
दर दर दरसत अनहत गरजत,
झरत अगर रस अधर अधर।।

मैंने सवाल किया कि उर्दू फारसी के अलावा हिन्दी तथा मेवाड़ी में भी कोई लावणी ख्याल रचा गया? इस पर अकबर बेग ने कहा, यही क्यों हमने तो एक जगह फरमाइश हुई तो अंग्रेजी में भी आशु रचना सुनादी। उस्मान भाई ने इशारा पाकर सुनाना शुरू किया-

दिस तुर्रा नेम इज वेरी बेड माई डियर।
आई यम कलंगी सींगींग कम टू हियर।।
द फेमस नम्बर सिक्स काल टू तुर्रा।
एवरीटाइम हटिंग हूटिंग एण्ड हुर्रा।।
इट फैलडाउन हियर देयर एण्ड नियर।
आई यम कलंगी सींगींग कम टू हियर।।

खाजू बेग के दफ्तर :

उस्ताद आशु रचनाकार होते हैं। कोई भी विषय, छंद तथा समझ, स्थिति का वाकया हो, ये फटाफट खलक पड़ेंगे। ऐसे कई हस्तलिखित पोथे अकबर बेग ने संभालकर सुरक्षित कर रखे हैं। हम उनके साथ गये जहां एक कोटड़ी से उन्होंने खाजू बेग के हाथ के लिखे बहीड़े (दफ्तर) निकाले। उन्होंने उसी लहजे तरन्नुम में हमें कई लावणियां सुनाई।

उन उर्दू पोथों (बहियों) में से तीन ने हमारा ध्यान अधिक आकर्षित किया जिन पर लिखा था-

(क) खयाल बहर, शकिस्ता बहर, तवील और बहर लंगड़ी
(ख) बहर खफीफ बहर दून बहर, बदरून सखी दौड़ वगैरा
(ग) अज तस्नीफ शायर मिर्जा खाजू बेग,
घोसुंडा, जिला चित्तौड़गढ़ मोवरखा। नवंबर 1974

अपने पूर्वजों की धरोहर तथा विरासत जिस आस्था श्रद्धा और विश्वास के साथ अकबर बेग ने सुरक्षित एवं संरक्षित ही नहीं कर रखी, अभी भी उसका प्रदर्शन कर जन-जीवन का स्वस्थ सुखद रंजन करने का जो बीड़ा उठा रखा है, उस पर गर्व-गौरव होना स्वाभाविक है।

यहां आकर मुझे घोसुंडा के बहाने पिछले 50 वर्षों के दौरान सम्पर्क में आये कई कलाकारों, गायकों, वादकों और ख्याल प्रदर्शनों की स्मृतियां हो आईं।

शिव 'मृदुल' ने भी अपने संपर्क की कई घटनाओं का जीवंत उल्लेख किया और कहा कि आज की असली यात्रा तो धनेतकला में रह रहे शहनाई वादक हरिराम नगारची से भेंट करने की थी। कुछ दिन पहले मैंने उनको सूचना भी भिजवा दी थी किंतु होनहार कलाकार अपने मन का राजा होता है। वह और उसका बाजा हाजिर तो वह नींद में भी सपनों के सहारे तान छोड़ता जाता है। पिछले साठ वर्ष से भी अधिक काल से वे तुर्रा कलंगी ख्यालों में शहनाई की रंगतों से जो रंग बरसा रहे हैं उसकी रसवर्षा के लिए फिर कोई सुयोग बनेगा।

शहरवासी घबराएं नहीं, अधिकांश पॉजीटिव केस एक ही क्षेत्र से : कलक्टर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी ने कहा कि पछले सप्ताह भर में उदयपुर शहर के एक ही क्षेत्र से बड़ी संख्या में कोरोना पोजीटिव केस आए हैं, शेष जो केस आए हैं वो भी इन क्षेत्रों में आने-जाने वाले या इनके संपर्क वाले ही हैं। किसी भी स्थिति में शहरवासियों को डरने की जरूरत नहीं है, शहर के हर मोहल्ले पर प्रशासन की पूरी निगाह है। लगातार सेंपलिंग की जा रही है ऐसे में अगले कुछ और दिनों तक ऐसे केसेज आएंगे, सभी लोग सतर्क रहें और कंटेंटमेंट जोन व कर्फ्यू के प्रावधानों का पालन करें, जल्द ही हम इन स्थितियों से निकल जाएंगे।

कलक्टर श्रीमती आनंदी शुक्रवार को जिला परिषद सभागार में एसपी कैलाशचन्द्र विश्नोई और सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी के साथ मीडियाकर्मियों को संबोधित कर रही थी।

उन्होंने कहा कि संक्रमण नहीं फैले, इसलिए ही कंटेनमेंट जोन घोषित किया है। लगातार सेंपलिंग जारी है, पहले दिन संक्रमित पाए गए क्षेत्र के 100 मीटर वाले क्षेत्र में, फिर 500 मीटर और फिर एक किलोमीटर क्षेत्र में इसे बढ़ाया गया है।

उन्होंने कहा कि पिछले 8 दिन में 3 हजार 700 सैंपल लिए हैं और इसमें से जो केसेज आए हैं वे मात्र 8 प्रतिशत ही हैं, जो काफी कम हैं। कलक्टर ने बताया कि आरएनटी से प्राप्त हुए आंकड़ों में एक अच्छा ट्रेंड देखने में आया है, कि 50 साल से कम उम्र के जो संक्रमित लोग हैं, उनकी 4 से 5 दिन में ही नेगेटिव रिपोर्ट आ रही है। वे तेजी से ठीक हो रहे हैं और 50 साल से अधिक उम्र के लोगों की रिपोर्ट भी नेगेटिव आ रही है।

कलक्टर ने बताया कि अब तक 354 पॉजीटिव केस आए हैं। इनमें से 289 कांजी का हाटा के हैं या ऐसे हैं जो कांजी का हाटा क्षेत्र के लोगों से या क्षेत्र के संपर्क में थे। संक्रमण के तीन स्रोत माने हैं, पहले प्रवासी श्रमिक, दूसरे हॉस्पिटल में काम कर रहे मेडिकल स्टाफ और तीसरा कांजी का हाटा। उन्होंने कहा कि प्रवासी श्रमिकों में एक अच्छी बात दिख रही है, कि वे खुद होम क्वारंटीन हो रहे हैं।

एसपी कैलाशचन्द्र विश्नोई ने बताया कि धानमंडी, घंटाघर का पूरा थाना क्षेत्र और सूरजपोल थाना क्षेत्र के एक तिहाई हिस्से में सख्त कर्फ्यू लागू है वहीं शेष नगर निगम क्षेत्र को कंटेनमेंट जोन घोषित किया हुआ है। उन्होंने आह्वान किया कि लोग घर से बाहर न निकलें।

सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी ने बताया कि उदयपुर में अभी एक भी क्रिटिकल कंडीशन में नहीं है। अधिकतर संक्रमित ऐसे हैं, जिनमें कोई लक्षण नहीं हैं। अभी तक उदयपुर में 8 लोग ठीक होकर डिस्चार्ज हो चुके हैं। जिनकी रिपोर्ट नेगेटिव आ रही है, उन्हें भी अभी डिस्चार्ज नहीं किया जाएगा। वे 14 दिन निगरानी में रहेंगे।

पारस जे. के. हॉस्पिटल ने कोरोना शहिदों को श्रृद्धाजंली देकर मनाया नर्सेज डे

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में नर्सेज दिवस सोश्यल डिस्टेसिंग का ध्यान में रखते हुये सादगी पूर्ण मनाया गया। इस दौरान अस्पताल के फेसेलिटी डायरेक्टर विश्वजीत, डिप्टी मेडिकल सुप्रीटेन्डेंट डॉ. मनि भटनागर, नर्सींग हैड शशिबाला व चीफ नर्सींग ऑफिसर वीनिता चावला सहित सभी नर्सींग कर्मियों ने फ्लोरेस नाइटिंगल को पुष्पाजंली अर्पित करके नर्सेज डे के कार्यक्रम की शुरुआत की।

विश्वजीत ने बताया कि फ्लोरेंस नाइटिंगल को श्रृद्धाजंली देने के बाद सभी ने कोरोना के दौरान शहिद हुये नर्सिगं कर्मिर्या के लिए 2 मिनिट का मौन रखकर उनको श्रृद्धजंली दी व अस्पताल में विशिष्ट सेवा देने वाले नर्सिंग कर्मियों को सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। विश्वजीत ने कहा कि नर्सेज कोरोना काल में अपनी जान को जोखिम में डाल कर समाजसेवा की नई मिसाल पेश कर रहीं हैं। मैं इन सभी को नमन नमन करता हूं।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वाषिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (2)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(5) वन्यागड़ा जीमाना :

जितने दिन की सांजी ली जाती है उतने ही दिन वर-वधू को जीमने जाना पड़ता है। एक-एक दिन में कई-कई घर जाने पर थोड़ा-थोड़ा टोटके के रूप में, सब जगह दस्तूर रूप में, जीमण जीमना होता है। जीमने पर सीख रूप में रूपया, नारियल दिया जाता है। जीमनेवाले के साथ छोटे-छोटे बालक-बालिकाएं होती हैं जो वन्यागड़े कहलाते हैं। संख्या के अनुसार एक घर में एक अथवा एक से अधिक जीमते जाते हैं।

(6) माया बिठाना :

माया से तात्पर्य मातृ स्थापना से है। वधू के यहां स्तंभ रोपण कर यह क्रिया संपन्न होती है। यह स्तंभ माणक थंब के नाम से जाना जाता है। इसका कक्ष अलग होता है। दीवाल की एक तरफ पांच मंगल कलश की स्थापना

की जाती है। भूमि पर गेहूं का स्वस्तिक बना प्रमुख कलश रखा जाता है। उस पर एक के ऊपर एक उतार देते चार अन्य कलश रखे जाते हैं।

ऊपर की मटकी का नारियल से मुंह ढक कर ऊपर लाल वस्त्र को लच्छे से बांध दिया जाता है। कलश पर कुंकुम् की बिंदी-सात्या किया जाता है। दीवाल पर गणेशजी का पाठा लगा गजानंदजी की स्थापना पाठे पर तिलक अक्षत लच्छा चढ़ा कर की जाती है। घी का दीपक किया जाता है। गणेशजी के पाठे के सम्मुख आसन लगा विवाह कराने वाले, वधू के माता-पिता सजोड़े बैठकर मन से वैवाहिक कार्य निर्विघ्न समाप्त होने का संकल्प करते हैं।

(7) कलश वांदना :

विवाहोत्सव प्रारंभ होने पर जो-जो समधी आते हैं उनका द्वार पर ही पूर्ण सत्कार-स्वागत कलश वांदकर किया जाता है और तब ही उनका घर के भीतर प्रवेश होता है। इस हेतु बेनकुंवाई (बहिन-बेटी) और घर की बहू गीत गाती हुई उनके स्वागतार्थ पहुंचती है। एक के हाथ में मटकी (छोटी कलशी) होती है जिसके मुंह पर लच्छा बंधा होता है और ढक्कन के रूप में बिजोरा ढका होता है। समधीजी के पास पहुंचकर उनके तिलक लगाया जाता है।

आनेवाला समधी अपने हाथ से उस मटकी का ढक्कन उठाकर उसमें नेग रखता है। यह नेग एक रूपये से लेकर ग्यारह रूपये तक होता है। सजोड़े जो दंपत्ति आते हैं, स्वागत के पश्चात वे दोनों नेग रखते हैं। यह एक प्रकार से उनके विवाह में उपस्थित होने का सूचक है जिसे आजकल रजिस्ट्रेशन करना कहा जाता है। गीत है-

घोड़लड़ा खड़ वाजिया
ओ म्हारे फलाणा सा रा बाई आविया
ओ म्हारी आंख फरुकै नाक ळरै
म्हींतो दीवो लेइने जोवां आपरी वाट
म्हारे पामणला आया ओ
म्हारे घरां रंग होसी।

अर्थात् घोड़े की नाळ बजी है। मेरी आंख फड़क रही है। नाक झर रहा है। मेरे घर पाहुने आये हैं। घर में रंगोत्सव होगा।

बहिन-बेटी आने पर उसके पिता के साथ उसका और बहू आने पर उसके सुसरा के साथ उसका नाम लिया जाता है।

(8) चाक पूजना :

मांगलिक रूप में चाक सृष्टि का तथा कलश विश्व का प्रतीक है। यह विवाह पूर्व मुहूर्तानुसार तीन, पांच, सात अथवा नौ दिन का होता है। चाक नूतने-पूजने की क्रिया वर तथा वधू दोनों के घर सम्पन्न होती है। यह अक्सर वर-वधू की माता द्वारा पूजा जाता है। मां की अनुपस्थिति में बहिन अथवा भावज पूजती है। चाक लाने के लिए मुहूर्त के अनुसार गाजेबाजे के साथ सभी औरतें कुम्हार के घर जाती हैं। कुम्हार के वहां रोली, मोली तथा चावल आदि से चाक पूजती हैं। फिर उस पर सातिया मांड चवन्नी तथा पतासी रखती हैं। कुम्हार कलश पर चुकल्या तथा उसके ऊपर बीजोरा का सैट बनाकर पूजनेवाली को देता है। यह चाक एक से अधिक सग्गीजी लेती हैं। कलश के तिलक निकाल चुकल्ये को चांदी की लड़ पहना दी

जाती है। चाक लाने वाली नये वस्त्राभूषणों से सज्जित हो साड़ी पर चूंदड़ धारण करती है। सिर पर कोड़ियों तथा मोतियों की बनी लंबी लटकनों वाली ईडोणी रख उस पर चाक धारण करती है। कुम्हार दंपत्ति को वस्त्र तथा दक्षिणा दी जाती है।

वहां से सभी गाजेबाजे के साथ आती हैं। घर लाकर चाक माया के स्थान पर स्थापित कर दिया जाता है। उसी दिन से विनायक की स्थापना हुई समझ ली जाती है। स्थापना वाला स्थल लींपपोत कर पवित्र कर लिया जाता है। दीवाल पर गजानंदजी का पाठा लगा दिया जाता है। ईडोणी (चूमली) का यह गीत बहुप्रसिद्ध है-

म्हारी सवा लाख री लूंब
गम गई ईडोणी
ईडोणी मोत्यां जड़ी जी कांई
लालां जड़ी पचास
गम गई ईडोणी।।

अर्थात् मेरी सवा लाख की लटकन (झूमका) वाली मोतियों तथा पचास लालों से जड़ी ईडोणी खो गई।

चाक लेने जाते समय तथा लेकर आते समय आनंद मंगल सूचक गीत गाये जाते हैं। जाते समय की गीत-पंक्तियां इस प्रकार हैं-

मादर वाज्यो, मादर वाज्यो
रावतजी री पोळ
जणी घर हरख वधावणो।

अर्थात् रावतजी की पोळ मांदळ बजा, जहां उल्लसित वातावरण में विवाह रचाया जा रहा है।

(9) सपने गाना :

चाक के दिन से लेकर विवाह के दिन तक सुबह ही सुबह औरतें मिल सपने गीत गाती हैं। ये सपने तीर्थंकरों से संबंधित होते हैं। विधवाएं भी इन्हें गाने के लिए सम्मिलित होती हैं। तीर्थंकर भगवान ने भी जब जन्म धारण किया, गर्भावास में उनकी माताओं को भी सपने आए थे।

ये सपने शुभ एवं मंगल से सूचक होते हैं। गानेवालियों को पतासियां दी जाती हैं। सपनों में प्रथम ऋषभदेव से लेकर अंतिम चौबीसवें महावीर स्वामी तक की गुणावली गाई जाती है। ये खुले स्थान में गाये जाते हैं। गाते समय ऊपर छत के एक किनारे किसी साड़ी को लटका दिया जाता है।

(10) घूघरी बांटना :

मूंग हाथ लेने अर्थात् सांजी दिलाने के बाद वर तथा वधू के घर घूघरी बंटाई की जाती है। घूघरी बनाने के लिए पहले गेहूं को खांड कर उसका छिलका उतार लिया जाता है। फिर उसे हल्के-हल्के आंच में बाफ दिया जाता है। घूघरी के साथ गुड़ की लापसी मिलाकर थालियों में उसके छोटे-छोटे लेणे बनाकर महिलाओं द्वारा गांव में सब सगेसोई, अड़ोसी -पड़ोसी के घरों में बांट दिये जाते हैं। गीत है-

कठेड़ा सूं आई, हंजामारू घूघरी
कठेड़ा सूं आया नारेळ.....

(11) मेंहदी लगाना :

विवाह पूर्व जिन समधियों को लाया जाता है उनमें सर्वप्रथम दूल्हे की भुआ अर्थात् दूल्हे के पिता की बहिन को लाया जाता है। यही प्रथम आगमन (पैल आणा) होता है।

भुवा अपने साथ मिठाई निमित्त पांच सेर नुगतीदाणा अथवा बेसन की चक्की लाती है। यहां आकर भुवा के हाथ-पांवों में मेंहदी लगवाई जाती है। मेंहदी लगाने वाली चार औरतें होती हैं जो दोनों हाथ-पांवों में मेंहदी की भांतें निकालती हैं।

चार कटोरियों में घोली मेंहदी ली जाती है। दियासलाई की सींक से मेंहदी की भांतें दी जाती हैं। मेंहदी लगाने वाली बाइयों को

मेंहदी वाली कटोरी तथा एक-एक नारियल और पतासियां दी जाती हैं। इसके बाद से विवाह में आई सभी बहिन-बेटियां मेंहदी लगाती हैं। बचीखुची शादी के दिन मेंहदी के रंग में रंगती हैं।

(12) मांडपा-माणक थंभ :

शादी के दिन मुहूर्त के अनुसार मेड़ी-ओवरे के बाहर माणक थंभ स्थापित किया जाता है। यह लकड़ी का बना होता है जिस पर हल्दी रंगा पोत कर दिया जाता है। ऊपर चारों दिशाओं की छोटी-छोटी खपचियां जोड़ उन पर चिड़कल्यां बिठा दी जाती हैं। लाल कपड़े की छोटी सी गठरी में मूंग, मेंहदी, चावल तथा चांदी का कापा रख लच्छे से माणक थंभ के बांध दी जाती है।

जंगल से मांडपा यानी मंडप तैयार करने हेतु बांस की लकड़ी लाई जाती है। मंडप छवाया जाता है। इसी में वर-वधू का विवाह कराया जाता है। मांडपा लाने तथा मंडप छवाने वाले को तिलक निकाल हाथ में लच्छा बांध आटा, घी, गुड़, नारेळ आदि का भाता (नेग) दिया जाता है। मांडपे का गीत -

सखी डूंगरिया सूं आयो सोवन मांडपो
सखी उदपर ती आयो माणकथंभ
पनवाड़्यां मांडो छाईरयो।

(13) बत्तीसी झेलाना :

कपड़े की बनी लाल कोथली में 32 की संख्या में दाख, बादाम, लोंग, खारक तथा हल्दी मिश्रित गेहूं के आटे के बने अंगुली की शक्ल के फर के अलावा खोपरा, कापड़ा तथा पांच रूपया रोकड़ रखकर लच्छे से कोथली का मुंह बंद कर दिया जाता है। नायण के साथ बहिन लेकर भाई को न्यौतने जाकर यह कोथली देती है। इसे बत्तीसी झेलाना कहते हैं। एक पाटे पर भाई की गोद में बहिन महिलाओं की उपस्थिति में बत्तीसी झेलाती है। बहिन द्वारा भाई-भाभी के टीला-टींकी की जाती है। महिलाएं गीत गाती हैं-

छाब भरियो सैंया नारेळां रो
दीजो म्हारे दादासा रे घरै
या तो आई रे बत्तीसी
म्हारा दादासा घर दीजो
माताबाई मलतां म्हारा नैण झरावण लागा।

भाई की ओर से बहिन को भोजन कराया जाकर विदाई में नायण को पांच रूपया तथा बहिन को साड़ी-वेश दिया जाता है। बहिन के साथ उसके निकट के समधी, बेटी-जंवाई भी जाते हैं।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।